

Seat No. : _____

MA-II-66

April-2007

Hindi

Paper-VII

अनुवाद विज्ञान और अनूदित साहित्य

Time : 3 Hours]

[Max. Marks : 100

1. अनुवाद की परिभाषा देते हुए उसका क्षेत्र बताइए । (15)
अथवा
अनुवाद के स्वरूप की चर्चा करते हुए बताइए कि वह कला है या शिल्प ?
2. अनुवाद के प्रकारों की विस्तृत चर्चा कीजिए । (15)
अथवा
अनुवादक के गुणों की चर्चा करते हुए बताइए कि आदर्श अनुवादक किसे कहते हैं ?
3. 'सत्य के प्रयोग' एक आदर्श अनूदित कृति है – चर्चा कीजिए । (15)
अथवा
'सत्य के प्रयोग' के आधार पर महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए ।
4. निम्नलिखित परिच्छेद का हिन्दी में अनुवाद कीजिए । (15)
मन वचन कायाथी ब्रह्मचर्यनुं पालन केम थाय अे अेक झिकर अने सत्याग्रहना युद्धने सारु
वधारेमां वधारे वधत केम बयी शके अने वधारे शुद्धि केम थाय अे बीजु झिकर. आ अे झिकरोअे
मने जोराकमां वधारे संयम ने वधारे झेरझारो करवा प्रेर्यो. वणी पूर्वो जे झेरझारो मुष्यत्वे
आरोग्यनी दृष्टिअे करतो ते उवे धार्मिक दृष्टिअे थवा लाग्या. आमां उपवास अने अत्याहारे
वधारे स्थान लीधु. जेनामां विषयवासना वर्तो छे तेनामां जलना स्वादो पण सारी पेठे डोय छे.
आ स्थिति भारी पण हती. जननेन्द्रिय तेमज स्वादेन्द्रिय पर काबू भेणवतां मने अनेक
विटंबशाओ नडी छे, ने उजु बेउनी उपर पूरो जय भेणव्यो छे, अेवो दावो हुं नथी करी शकतो.
मने पोताने में अत्याहारी मानेलो छे. मित्रोअे जेने भारो संयम मान्यो छे, तेने में पोते कही
संयम मान्योज नथी. जे अंकुश राभता हुं शीष्यो तेटलो पण न राभी शक्यो डोत तो हुं पशु
करता पण उतरत ने क्यारनो नाश पाभ्यो डोत.
अथवा
निम्नलिखित में से किसी एक पर निबंध लिखिए :
(अ) गाँधीजी की ब्रह्मचर्य संबंधी मान्यता ।
(ब) 'सत्य के प्रयोग' के मार्मिक प्रसंग ।
(क) वर्तमान युग में गाँधी-विचारों की प्रासंगिकता ।

5. निम्नलिखित परिच्छेद का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : (15)

“जिन्दगीमां डेटडेडला पडाव आवता डोय छे ! समजइ पडेलां आंभ भूली डशे, ने त्पारथी सृष्टिनां अवनवा दृश्यो विस्मय जगवतां रखां छे. आंभ, डान अने स्पर्शथी अनुभवेला स्पंदनोथी यित्त तरबतर छे. यित्तमां रयाया छे अजायब अेवा नानां-नानां अनुभव विश्वो ! हुं प्रत्येक दिवस आगला दिवस डरतां डंईक वधारे समृद्ध थाई छुं. प्रति पण, प्रति दिन मारांमां डंईक डमेरातु रडे छे. आम तो डवे विज्ञाने पण सिद्ध कर्युं छे, गर्भमां भीजनुं स्थापन थाय पछी डोषनुं सतत द्विगुडित थवानुं शरु थई जाय छे ! नरी आंभे न डेभाय अेवी आ प्रडियाने हुं जाणे मडेसूस डरी रह्यो छुं, डधु याड राभवु सडेलुं नथी, पण अेकाड अंश, डोई गीत डे गीतनुं मुणुं जेम यित्तमां जडाई जाय ने पछी अत्मान पणोजे छुत्त अने ममणाव्ये राभे अेम जिन्दगीना डेटलाक प्रसंगो यित्तमां अंकाई जाय ने पछी रिवाईन्ड डरी डरीने अेने ममणाववा गमे, सडजपणे ज गमे.”

अथवा

“The first thing which a scholar should bear in mind is that a book ought not to be read for mere amusement. Half educated persons read for amusement, and are not to be blamed for it; they are incapable of appreciating the deeper qualities that belong to a really great literature. But a young man who has passed through a course of university training should discipline himself at an early day never to read for mere amusement. And once the habit of discipline has been formed, he will find it impossible to read for mere amusement. He will then impatiently throw down any book from which he cannot obtain intellectual food, any book which does not make an appeal to the height of emotions and to his intellect.”

6. निम्नलिखित संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (10)

(1) अनुवाद में कोश का महत्त्व

अथवा

अनुवाद की सार्थकता

(2) ‘सत्य के प्रयोग’ शीर्षक की सार्थकता

अथवा

सत्य के प्रयोग के अंक की विशेषता : पूर्णाहुति प्रकरण

7. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के लिए हिन्दी शब्द लिखिए : (15)

Collective unconscious, Deconstruction, Catharsis, Feminist criticism, Humanism, Motif, Paradox, Farce, Ideology, Monograph, Poetic justice, Tone, Mayor, Tribunal, Language commission, World Health Organisation.